हिंदी एकांकी का उद्भव और विकास

हिंदी प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष, पत्र-5

हिंदी में एकांकी कला का विकास नाटकों के साथ-साथ हुआ | सामान्य रूप से देखने पर नाटक और एकांकी एक जैसे दिखाई देते हैं | एकांकी के लघु आकार में नाटक के सभी तत्व विद्यमान रहते हैं, किंतु यह एक स्वतंत्र नाट्य विधा है | किसी बड़े नाटक के एक अंक को एकांकी नहीं कहते हैं | नाटक में जीवन का समग्र चित्र प्रस्तुत किया जाता है, जबकि एकांकी में जीवन की किसी महत्वपूर्ण घटना, परिस्थिति या समस्या को एक ही अंक में प्रस्तुत किया जाता है | एकांकी के विकास का विवरण हम इस प्रकार देख सकते हैं |

भारतेंदु युग में एकांकी का उद्भव -

हिंदी में एकांकी का प्रचलन नाटक के साथ भारतेंदु युग में ही हुआ | स्वयं भारतेंदु ने संस्कृत परंपरा पर मौलिक एकांकियों की रचना की है | अंधेर नगरी, प्रेमयोगिनी, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति आदि उनके मौलिक प्रहसन हैं | भारतेंदु के एकांकियों का नाट्यरूप तो पश्चिम शैली का है, किंतु उनमें प्रस्तुत की गई समस्याएं सर्वथा नवीन है | भारतेंदु के अतिरिक्त इस युग में राधाचरण गोस्वामी, बालकृष्ण भट्ट, बद्रीनारायण, किशोरीलाल गोस्वामी, अंबिकादत्त व्यास, राधाकृष्ण दास आदि के विविध प्रहसनों तथा एकांकियों की रचना की | इन सब में सामाजिक बुराइयों पर व्यंग्य किया गया है | भारतेंदु युग प्रहसन और एकांकी कला की दृष्टि से परंपरावादी होते हुए भी विषय की दृष्टि से आधुनिक एकांकी के निकट है |

द्विवेदी युग में एकांकी का विकास:-

शिल्प की दृष्टि से द्विवेदी युग भारतेंदु युग से एक कदम आगे बढ़ा | इस युग में प्रहसन और व्यंग की कोटि में आने वाले अनेक एकांकियों की रचना हुई | इस प्रकार के एकांकियों में बद्रीनारायण कृत चुंगी की उम्मीदवारी, रामसिंह वर्मा कृत रेशमी रुमाल,

किसमिस, रूपनारायण पाण्डेय कृत मूर्ख मंडली, मंगला प्रसाद विश्वकर्मा कृत शेर सिंह, सियारामशरण गुप्त कृत कृष्णा, ब्रजलाल शास्त्री कृत नीला, दुर्गावती, पन्ना, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' कृत चार बेचारे आदि एकांकी उल्लेखनीय हैं |

आधुनिक युग और एकांकी:-

आधुनिक शैली का प्रथम एकांकी जयशंकर प्रसाद कृत 'एक घूंट' को माना जाता है | यद्यपि इस एकांकी में भी संस्कृत नाट्यकला की ओर झुकाव है फिर भी इसमें आधुनिक एकांकी कला का पूर्ण निर्वाह हुआ है | प्रसाद जी के बाद तो डॉ० रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र, लक्ष्मी नारायण मिश्र, उपेंद्रनाथ अश्क, उदय शंकर भट्ट, सेठ गोविंद दास आदि एकांकीकारों ने अपने एकांकियों से हिंदी साहित्य का भंडार भरना आरंभ कर दिया |

आधुनिक युग के प्रमुख एकांकीकारों का परिचय निम्नलिखित है :-

डॉ० रामकुमार वर्मा-

डॉ० रामकुमार वर्मा ने एकांकी रचना को अपनी साहित्य साधना का लक्ष्य बनाया और हिंदी में एकांकी के अभाव की पूर्ति की | उनका पहला एकांकी 'बादल की मृत्यु' सन् 1930 में प्रकाशित हुआ था | वर्मा जी ने शताधिक एकांकियों की रचना की है | इन एकांकियों के विषय सामाजिक और ऐतिहासिक दोनों ही प्रकार के हैं | डॉ० रामकुमार वर्मा को हिंदी एकांकी का जनक माना जाता है |

उदय शंकर भट्ट-

उदय शंकर भट्ट का पहला एकांकी संग्रह 'अभिनव' के नाम से सन् 1940 में प्रकाशित हुआ था | इसके पश्चात उन्होंने सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, मनोवैज्ञानिक आदि अनेक विषयों पर सैकड़ों एकांकियों की रचना की | वर निर्वाचन, नए मेहमान, गिरती दीवारें आदि उनके अनेक प्रसिद्ध एकांकी हैं |

लक्ष्मी नारायण मिश्र-

हिंदी एकांकीकारों में लक्ष्मी नारायण मिश्र का महत्वपूर्ण स्थान है | उनके एकांकियों में अशोक वन, प्रलय के पंख पर, बलहीन, स्वर्ग में विप्लव आदि उल्लेखनीय हैं | इनमें

पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि सभी प्रकार की समस्याओं को चित्रित किया गया है |

उपेन्द्रनाथ अश्क-

उपेन्द्रनाथ अश्क अपनी एंकाकियों में समाज की विविध समस्याओं का सफलतापूर्वक चित्रित किया है | अश्क जी के दो दर्जन से अधिक एकांकी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं | लक्ष्मी का स्वागत, स्वर्ग की झलक, पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ, अधिकार का रक्षक आदि उनके उल्लेखनीय एकांकी हैं |

सेठ गोविंददास-

सेठ जी ऐतिहासिक, पौराणिक, राजनैतिक आदि विभिन्न विषयों पर एकांकियों की रचना की है | इनके एकांकियों में ईद और होली, स्पर्धा, मैत्री आदि अच्छे समस्या मूलक एकांकी हैं | इनकी भाषा, शैली, शिल्प, विचार, प्रतिपादन आदि सभी में सरलता है |

जगदीश चंद्र माथुर-

माथुर जी का पहला एकांकी 'मेरी बांसुरी' सन् 1936 ई० में प्रकाशित हुआ था | इसके पश्चात उनके अनेक एकांकी प्रकाशित हुए, जिनमें भोर का तारा, कलिंग विजय, खंडहर, घोंसले, शारदीया आदि मुख्य हैं |

विष्णु प्रभाकर-

आधुनिक एकांकीकारों में विष्णु प्रभाकर का महत्वपूर्ण स्थान है | प्रभाकर जी ने सामाजिक, राजनैतिक, हास्य, व्यंग प्रधान तथा मनोवैज्ञानिक एकांकी लिखे हैं |

'मां का बेटा', 'प्रकाश और परछाई', 'रामू की होली', 'मोटे लाला', 'अशोक', 'बारह एकांकी', 'हमारा स्वाधीनता संग्राम' इत्यादि इनके प्रमुख एकांकी संग्रह हैं। इनका 'मां' एकांकी अत्यंत चर्चित रहा है।

अन्य प्रतिभाओं का आगमन-

स्वतंत्रता के पश्चात अन्य कई प्रतिभावों ने एकांकी क्षेत्र में प्रवेश किया | इनमें विनोद रस्तोगी, जयनाथ नलिन, मोहन सिंह सेंगर, लक्ष्मीनारायण लाल, रामवृक्ष बेनीपुरी, धर्मवीर भारती आदि के नाम आदर के साथ लिए जा सकते हैं | हिंदी साहित्य को इस विधा के रचनाकारों में बहुत आशाएं हैं |

आवश्यक निर्देश - समस्त विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह अन्य पाठों का भी अध्ययन कर पाठ के मूल भाव को समझें । उससे संबंधित प्रश्न उत्तर का अभ्यास करें। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत पाठ्य सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य ,लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं जिसका अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है ।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी विभाग

नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय